ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

संघर्ष की राह से
सशक्तीकरण तक
(पृष्ठ – 02)

आत्मनिर्भरता की राह पर
एक सशक्त कदम
(पृष्ठ – 03)

नई शुरुआत की
एक मिसाल
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – अगस्त 2025 ।। अंक – 49

सतत् जीविकोपार्जन योजना और ग्रामीण बिहार में रोजगार सृजन

बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी एवं जीविका द्वारा संचालित सतत् जीविकोपार्जन योजना ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन में अहम् भूमिका अदा की है। कल तक गरीबी रेखा से नीचे गुजर–बसर कर रहे परिवार इस योजना से जुड़कर आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति की ओर अग्रसर हैं। सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के अत्यंत गरीब परिवार की महिला मुखिया सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित होकर सफल उद्यमी बन रही हैं।

योजना का विस्तार ग्रामीण क्षेत्र के साथ साथ शहरी क्षेत्रों में भी हुआ है। अत्यंत गरीब परिवारों के महिला को ग्राम संगठन के अनुमोदन के बाद योजना से जोड़कर उन्हें रोजगार उपलब्ध करायी जा रही है। चिन्हित परिवारों को वित्तीय सहयोग देते हुए सूक्ष्म व्यवसाय, गव्य, बकरी एवं मुर्गी पालन से जोड़ा गया है। सिलाई केंद्र, किराना दुकान, मनिहारी दुकान, सब्जी और फल दुकान, ब्यूटी पार्लर, खाद्य प्रसंस्करण से संबंधित व्यवसाय, मिठाई दुकान समेत उनके रुचि के अनुरूप कराए गए व्यवसाय ने रोजगार संवर्धन में बड़ी भूमिका अदा की है और इसके सापेक्षित परिणाम भी मिले हैं। वित्तीय पोषण, मार्गदर्शन, प्रशिक्षण एवं उसके बाद किये गए रोजगार के व्यापक परिणाम मिले हैं। देशी शराब एवं ताड़ी के उत्पादन एवं बिक्री में पारंपरिक रूप से जुड़े अत्यंत निर्धन परिवार तथा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य समुदायों के लक्षित अत्यंत निर्धन परिवार अब आत्मसम्मान के साथ रोजगार कर रहे हैं। गरीब परिवार अब आर्थिक स्वावलंबन के साथ ही समाज में मान–सम्मान भी पा रहे हैं। गरीबी उन्मूलन एवं आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति की प्रक्रिया रोजगार उपलब्ध कराते हुए गरीबी उन्मूलन हेतु निरंतर जारी है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, जीविका द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में 26 अप्रैल 2018 से संचालित हैं। परत दर परत वित्तीय पोषण एवं रोजगार संवर्धन से गरीबी दूर हो रही है। बदलाव की बयार गरीबी उन्मूलन एवं नशा उन्मूलन में बह रही है। योजन से लाभान्वित परिवारों को राशन कार्ड से लेकर बी.पी.एल कार्ड समेत कई सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

बिहार सरकार द्वारा सतत् आजीविका, क्षमता निर्माण एवं वित्तीय सहायता के माध्यम से सामाजिक बदलाव एवं आर्थिक सशक्तिकरण हेतु सतत् जीविकोपार्जन योजना संचालित है । कल तक समाज की मुख्य धारा से वंचित अत्यंत गरीब परिवार अब मुख्य धारा में शामिल होकर आर्थिक एवं सामाजिक उत्थान की ओर निरंतर अग्रसर है। ये वो परिवार हैं जो देशी शराब निर्माण एवं ताड़ी व्यवसाय से जुड़े हुए थे। अब वही परिवार सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर अपने रूचि के अनुरूप रोजगार करते हुए समाज के विकास में अब अपना योगदान दे रहे हैं । रोजगार के तहत राज्य की पारंपरिक लोक कलाओं एवं कलाकृतियों का निर्माण करते हुए उसके बिक्री राष्ट्रीय स्तर के बाजारों में करते हुए शुद्ध मुनाफा कमा रहे हैं। राज्य में रोजगार संवर्धन का यह एक बड़ा उदाहरण है जहां लोककलाएं पुनर्जीवित तो हो ही रही हैं गरीब कलाकारों को रोजगार भी मिला हैं।

वित्तीय वर्ष 2023–24 से अब सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत चयनित परिवारों को दो लाख रुपये देने का प्रावधान भी किया गया है जिससे रोजगार भी बढ़े हैं और उनका आकार भी बढ़ा है ।

बिहार की तस्वीर बदली है। इसके पीछे कड़ी मेहनत और पूरी पारदर्शिता से अत्यंत गरीब परिवार का चयन कारगर कदम रहा है। बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति (जीविका) द्वारा संचालित सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उन्हें जीने की राह दिखाई एवं सिखाई है और रोजगार संवर्धन से गरीबी उन्मूलन में मदद मिली है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित होकर हजारों परिवार गरीबी रेखा से बाहर निकलकर आर्थिक एवं सामाजिक सम्पन्नता की ओर अग्रसर हैं। स्वरोजगार करते हुए लाभान्वित परिवार की मासिक आमदनी 10 हजार रुपये से भी ज्यादा है। उनकी परिसंपत्ति महज तीन से चार साल में 1 लाख रुपये से ज्यादा हुई है। सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित महिलाओं की पहचान लखपतिया दीदी के रूप में बन रही है। सामाजिक परिवर्तन के तहत यह एक मौन क्रांति है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत मिले रोजगार से आमदनी बढ़ी है और कच्ची झोपड़ियां पक्के मकान में तब्दील हो रही है । सूक्ष्म व्यवसाय अब बड़े व्यवसाय में तब्दील हो रहे हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित हुए कई परिवार अब एक से अधिक व्यवसाय कर रहे हैं और उतरोत्तर वृद्धि की ओर है। गाय पालन के साथ ही दुग्ध उत्पादन व्यवसाय भी मुनाफा दे रहा है। ताड़ी एवं देशी शराब उत्पादन से जुड़े परिवार अब अपने पुश्तैनी एवं पारंपरिक व्यवसाय से इतर रोजगार करते हुए समाज में मान–सम्मान भी पा रहे हैं।

संघर्ष की राह से सशक्तीकरण तक

गया जिला के मोहरा प्रखंड के जेठीयन पंचायत के तरवाना गांव की रहने वाली मुन्नी देवी साजन जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं। वह प्रवाति जीविका महिला ग्राम संगठन से भी जुड़ी हुई हैं। उनकी जीवन यात्रा संघर्षों से शुरू होकर आत्मनिर्भरता की मिसाल बन चुकी है और आज वह कई महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनी हुई हैं।

मुन्नी देवी के परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर थी। वह और उनके पति दिनेश मांझी प्रतिदिन हज़ार रुपये तक का सामान खरीदकर उसे बेचते थे ताकि किसी तरह अपने बेटे की पढ़ाई और परिवार के खर्चों को पूरा कर सकें। लेकिन यह आय नाकाफी थी।

ऐसे कठिन समय में वर्ष 2024 में मुन्नी देवी का चयन ''सतत् जीविकोपार्जन योजना'' के अंतर्गत ग्राम संगठन द्वारा किया गया। उनके जीवन को सशक्त बनाने के लिए ग्राम संगठन के माध्यम से उनका सूक्ष्म नियोजन तैयार किया गया। ग्राम संगठन के सुझाव, समर्थन और मार्गदर्शन से उन्होंने एक स्थायी आजीविका के रूप में राशन दुकान खोलने का निर्णय लिया।

ग्राम संगठन की दीदियों ने मुन्नी देवी को राशन का सामान उपलब्ध कराया, जिससे उन्होंने आत्मविश्वास के साथ दुकान का संचालन शुरू किया। आज वह इस दुकान के माध्यम से प्रतिमाह 7000 से 8000 रुपये तक की आय अर्जित कर रही हैं। साथ ही अपने बेटे की पढ़ाई–लिखाई और पारिवारिक ज़रूरतों का भी पूरा ध्यान रख रही हैं।

मुन्नी देवी गर्व से कहती हैं कि ''जीविका ने उन्हें और उनके परिवार को एक नई राह दिखाई है''। उनकी कहानी इस बात का प्रमाण है कि यदि मेहनत और सही मार्गदर्शन मिले, तो जीवन में कोई भी बदलाव संभव है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से आई खुशहाली की रोशनी

जमुई जिला के खैरा प्रखंड अंतर्गत अरुणमावाक पंचायत के अरुणमावाक गांव की जीनत प्रवीण की जिंदगी संघर्षों से शुरू होकर आत्मनिर्भरता तक पहुंची है। ब्रेन ट्यूमर के कारण पति का देहांत हो जाने के बाद उन्हें दो बच्चों (एक बेटा और एक बेटी) के साथ जीवनयापन में कठिनाई झेलना पर रहा था। मायके से कभी–कभी पिता और भाई का सहयोग मिल जाता था, लेकिन यह स्थायी समाधान नहीं था।

अक्टूबर 2020 में जब जीविका द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत लाभार्थियों के चयन के लिए अभियान चलाया गया, तब दीदी का चयन अत्यंत गरीब परिवार के रूप में किया गया। योजना से जुड़ने के बाद ग्राम संगठन के माध्यम से उन्हें विशेष निवेश निधि से 10,000 रुपये की सहायता राशि मिली, जिससे उन्होंने दुकान खोलने के लिए बुनियादी ढांचे का निर्माण किया। इसके पश्चात जीविकोपार्जन निवेश निधि से 20,000 रुपये की अतिरिक्त सहायता दी गई, जिससे उन्होंने श्रृंगार दुकान की शुरुआत की।

धीरे–धीरे दीदी ने मेहनत से कारोबार को बढ़ाया और अब वह प्रतिदिन 300 से 400 रुपये तक की आमदनी करने लगी हैं। वर्तमान में उनकी मासिक आय लगभग 12,000 रुपये हो गई है। वह अब ग्रेजुएशन के सभी मापदंडों को पूर्ण करती हैं।

दीदी स्वयं अब खिलौने की मशीन चलाती हैं और फोटो कॉपी मशीन से फोटो स्टेट का काम भी कर रही हैं। उनकी परिसंपत्तियों का मूल्य लगभग 80,000 रुपये तक पहुंच गया है। उनके पास रहने के लिए अपना पक्का मकान है और बच्चे की पढ़ाई–लिखाई भी सुचारु रूप से चल रही है।

दीदी अब आयुष्मान कार्ड, राशन कार्ड और विधवा पेंशन जैसी योजनाओं से भी जुड़ चुकी हैं। आज वह अपने बच्चों के साथ आत्मसम्मान और खुशहाली से जीवन जी रही हैं।

आत्मनिर्भरता की राह पर एक सशक्त कदम

सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर संजू देवी ने दृढ़ संकल्प का एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है। वह खगड़िया जिले के अलौली प्रखंड की रहने वाली हैं। एक विधवा महिला के रूप में संजू देवी के लिए अकेले अपने बच्चों की परवरिश करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण था। सामाजिक तिरस्कार और आर्थिक तंगी ने उनके जीवन को और भी कठिन बना दिया था।

ऐसे समय में सतत् जीविकोपार्जन योजना उनके लिए आशा की किरण बनकर आई। इस योजना का उद्देश्य अत्यंत गरीब परिवारों को स्थायी आजीविका का साधन देना है। जीविका के माध्यम से संजू देवी को प्रशिक्षण के साथ–साथ आर्थिक सहायता भी प्राप्त हुई, जिससे उन्होंने फल और मनिहारी की दुकान खोल ली।

अब इस दुकान से आमदनी होने लगी, जिससे वह अपने बच्चों की शिक्षा और घरेलू जरूरतें पूरी कर पा रही हैं। इससे उन्हें केवल आर्थिक मजबूती ही नहीं मिली, बल्कि आत्म–सम्मान और आत्मनिर्भरता का अहसास भी हुआ।

संजू दीदी की कहानी इस बात का प्रमाण है कि जब सही समय पर सही सहयोग मिले, तो कोई भी महिला अपने हालात को बदल सकती है। एक संघर्षशील विधवा से गौरवशाली उद्यमी तक की उनकी यात्रा न केवल उनके लिए, बल्कि समाज की कई अन्य महिलाओं के लिए भी प्रेरणादायक बन गई है।

नई उम्मीदों की शुरुआत

रानी देवी की पहले की स्थिति ठीक–ठाक थी। उनके पति मजदूरी कर किसी तरह घर चला रहे थे। एक दिन दीदी और उनके पति किसी काम से बाजार जा रहे थे, तभी अचानक एक दुर्घटना में उनके पति गंभीर रूप से घायल हो गए। इलाज कराने के बावजूद वह ठीक नहीं हो सके और उनकी मृत्यु हो गई। इसके बाद घर में गरीबी आ गई, आमदनी का साधन खत्म हो गया। बच्चों की पढ़ाई, दीदी का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, सब पर असर पड़ा। जो दीदी पहले कभी घर से बाहर नहीं निकलती थीं, वह अब मजदूरी करने को मजबूर हो गईं।

सतत जीविकोपार्जन योजना के तहत जीवनधारा जीविका महिला ग्राम संगठन के माध्यम से अत्यंत निर्धन दीदियों की पहचान की गई। गांव में भ्रमण कर सामुदायिक संसाधन सेवी दीदी द्वारा जिन परिवारों की मासिक आय 3000 रूपये से कम थी, उन्हें चिह्नित किया गया। रानी देवी का चयन सर्वसम्मति से ग्राम संगठन द्वारा किया गया और परियोजना से मिलने वाले फंड के लिए अनुरोध भेजा गया। मास्टर संसाधन सेवी ने रानी देवी के घर आकर उनकी स्थिति को समझा और उन्हें व्यवसाय के विभिन्न विकल्पों से अवगत कराया। दीदी ने अपनी इच्छा से किराना दुकान खोलने का निर्णय लिया।

ग्राम संगठन द्वारा दीदी को विशेष निवेश निधि से 10000 रूपये जीविकोपार्जन निवेश निधि से 20000 रूपये और फिर जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि से सात माह तक प्रति माह 1000 रूपये की सहायता दी गई। किराना व्यवसाय के साथ दीदी ने बकरी पालन भी शुरू किया। अब उनकी मासिक आमदनी 5000 रूपये से अधिक हो गई है और कुल परिसंपत्ति भी बढ़कर 42,370 रूपये हो गई है।

अब दीदी अपने बेटे–बेटी को दोबारा पढ़ा रही हैं और मिष्ठान की दुकान खोलने की योजना बना रही हैं। दीदी पुरानी मुश्किलों से बाहर निकलकर आत्मनिर्भर बनने की दिशा में मजबूती से कदम बढ़ा रही हैं।

नई शुरुआत की एक मिसाल

रूपा देवी की कहानी उन अनगिनत महिलाओं में से एक है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानतीं, बल्कि अपने हौसले से नई राह गढ़ती हैं। 'डूबते को तिनके का सहारा', यह कहावत उनके जीवन पर पूरी तरह से लागू होती है। बिहार के एक सुदूर गांव बुआरीडीह, पंचायत बुआरीडीह, जिला मुजफ्फरपुर की रहने वाली रूपा देवी अनुसूचित जाति से हैं और अत्यंत गरीब परिवार से आती हैं।

रूपा देवी के परिवार की स्थिति बेहद दयनीय थी। उनके पति युगल किशोर राम की मजदूरी ही एकमात्र आमदनी का जरिया थी, जिससे किसी तरह दो वक्त की रोटी नसीब होती थी। लेकिन हालात और बिगड़ गए जब एक दुर्घटना में उनके पति का हाथ कट गया। परिवार की कमर ही टूट गई। कोई आमदनी का जरिया नहीं था, और जीवन एकदम थम सा गया था।

उनके गांव में जब जीविका परियोजना के अंतर्गत सतत् जीविकोपार्जन योजना (एस.जे.वाई.) का ड्राइव चला, तो उनके ग्राम संगठन की सीआरपी दीदी ने उन्हें इस योजना के लिए चिन्हित किया। ग्राम संगठन की बैठक में सर्वसम्मति से उनका चयन अत्यंत गरीब लाभार्थी के रूप में किया गया।

अक्टूबर 2024 में उन्हें जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत पहले चरण में 10,000 रुपये और फिर 40,000 रुपये की सहायता राशि दी गई। इस राशि का उपयोग उन्होंने काफी सोच–समझकर किया। ग्राम संगठन की सहायता और अपने समूह की दीदियों की सलाह से उन्होंने पत्तल (प्लेट) बनाने और चप्पल बनाने की मशीन लगाने का निर्णय लिया।

आज उनकी मशीन उनके गांव और आस–पास के क्षेत्रों में चर्चा का विषय बनी हुई है। कई लोग उनके यूनिट से पत्तल और चप्पल तैयार करवा रहे हैं। इससे जहां एक ओर उनका आत्मविश्वास बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर उन्हें आमदनी का एक स्थायी जरिया भी मिल गया है।

वर्तमान में रूपा दीदी अपनी मशीन से होने वाली आय के अलावा दैनिक मजदूरी का कार्य भी कर रही हैं, ताकि वह अपने परिवार की जरूरतों को पूरा कर सकें। हालांकि संघर्ष अब भी है, लेकिन अब उसके साथ उम्मीद भी है।

रूपा दीदी कहती हैं कि उन्हें पूर्ण विश्वास है कि एक दिन वह इस व्यवसाय को और आगे ले जाकर अच्छा लाभ कमाएंगी। उनका सपना है कि वह अपने बच्चों को बेहतर भविष्य दे सकें, खुद आत्मनिर्भर बन सकें और अपने पति के इलाज और परिवार की जरूरतों को अच्छे से पूरा कर सकें।

रूपा दीदी मानती है की जीविका परियोजना की मदद और सतत् जीविकोपार्जन योजना के कारण ही वे यह सब संभव हो पाया हैं। वह कहती हैं कि अगर यह योजना उनके जीवन में नहीं आई होती, तो शायद वे आज भी अंधकार में जी रही होतीं।

रूपा दीदी की कहानी न सिर्फ एक उदाहरण है, बल्कि एक प्रेरणा भी है उन तमाम महिलाओं के लिए, जो कठिनाइयों से जूझ रही हैं लेकिन उन्हें आगे बढ़ने का रास्ता नहीं मिल रहा। रूपा दीदी यह साबित करती हैं कि अगर इच्छाशक्ति हो और सही मार्गदर्शन मिले, तो कोई भी परिस्थिति आपको रोक नहीं सकती।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार